# 13 कदम मिलाकर चलना होगा

**अटल बिहारी वाजपेयी**

(जन्म : सन्. 1926)

भारतरत्न से सम्मानित हमारे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1926 के रोज मध्यप्रदेश के ग्वालियर शहर में हुआ था। माता का नाम कृष्णा देवी तथा पिता का नाम कृष्णबिहारी वाजपेयी था। आपने बी. ए. तक की पढ़ाई ग्वालियर से तथा एम.ए., एल. एल. बी. की पढ़ाई कानपुर में की। बचपन से साहित्य के रसिक वाजपायी जी कई बार स्वंतंत्रता प्राप्ति के लिए जेल गये। पत्रकारिता के क्षेत्र में आगे रहकर इन्होंने राष्ट्रधर्म, पांचजन्य, स्वदेश तथा अर्जुन पत्रिकाओं का संपादन किया। बाजपेयी एक उत्तम कवि, गीतकार भी हैं। प्रखर वक्ता थे उनके विरोधी भी उनकी प्रसंशा करते थे। उन्होंने चार दशक तक भारतीय संसद का प्रतिनिधित्व किया। वे तीन बार भारत के प्रधानमंत्री बने। आपको पद्मभूषण, हिन्दी गौरव, लोकमान्य तिलक सर्वश्रेष्ठ सासंद जैसे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

उनकी रचनाओं मे 'मृत्यु या हत्या', 'अमर बलिदान'. 'अमर आग', 'मेरी इक्यावन कविताएँ', 'सेक्युलरवाद', 'मेरी संसदीय यात्रा', 'सुवासित पुष्प', 'विचार बिन्दु', 'शक्ति से शान्ति', 'न दैन्यं न पलायनम्', 'नई चुनौती नया अवसर' आदि प्रमुख हैं।

प्रस्तुत रचना एक आह्वान गीत हैं। इस गीत में वे हम सब भारतवासियों को उन्नति की राह पर आगे बढ़ने के लिए कदम मिलाकर चलने का आह्वान करते हैं। माना कि इसमें बहुत कठिनाइयाँ हैं फिर भी सभी को साथ मिलकर चलना होगा। उस रास्ते पर चलते-चलते अपना सबकुछ न्यौछावर करने के लिए आगे बढ़ने की सीख देते हैं।

---

बधाएँ आती हैं आएँ
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ,
पावों के नीचे अंगारे
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ,
निज हाथों में हँसते-हँसते,
आग लगाकर जलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

हास्य-रुदन में तूफानों में,
अगर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, वीरानों में,
अपमानों में, सम्मानों में,
उन्नत मस्तक, उभरा सीना,
पीड़ाओं में पलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

उजियारे में, अंधकार में,
कल कहार में, बीच धार में,
घोर घृणा में, पूत प्यार में,
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,
जीवन के शत-शत आकर्षक,
अरमानों को ढलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

सम्मुख फैला अगर ध्येय पथ,
प्रगति चिरंतन कैसा इति अथ,
सुस्मित हर्षित कैसा श्रम श्लथ,
असफल, सफल समान मनोरथ,
सब कुछ देकर कुछ न मांगते,
पावस बनकर ढलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

कुछ काँटों से सज्जित जीवन,
प्रखर प्यार से वंचित यौवन,
नीरवता से मुखरित मधुबन,
परहित अर्पित अपना तन-मन,
जीवन को शत-शत आहुति में,
जलना होगा, गलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

## शब्दार्थ-टिप्पणी

**सदन** सलाई, रोना, **उद्यान** बाग **वीरान** सुनसान **चिरंतन** शाश्वत **इति** समाप्ति, अंत **श्लथ** थका, ढीला, नरम **अथ** आंरभ **प्रखर** तेज **आहुति** यज्ञ का दव्य

## मुहावरे

**आग लगाकर गलना** – स्वयं नष्ट होना, **पीड़ाओं में पड़ना** दु:ख सहकर बड़ा होना

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित दिए गये विकल्पों में से सही चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(1) कवि किसमें पलने की बात करता है ?

(क) अरमानों (ख) तूफानों (ग) वीरानों (घ) पींड़ाओ

(2) सब कुछ न्योछावर करके कुछ न मांगना कैसा गुण है ?

(क) पावक (ख) संत (ग) पावन (घ) पावस

(3) हमें दूसरों के लिए क्या अर्पण करना होगा ?

(क) प्यार (ख)यौवन (ग) जीवन (घ) तन-मन

(4) कवि ने मनोरथों को कैसा मानने के लिए कहा है ?

(क) समान (ख)मसमान (ग) उत्रम (घ)निम्न

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) प्रलय की घोर घटाओं का क्या अर्थ है ?

(2) हमे पीड़ाओं से मुक्ति पाने के लिए क्या करना होगा ?

(3) क्षणिक जीत या दीर्ध हार से कवि का क्या तात्पर्य हे ?

(4) यात्री का ध्येय क्या है ?

(5) परोपकार के लिए हमे जीवन को कहाँ गलाना-जलाना होगा ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) पँवो के तले अंगारे का अर्थ बताइए ?

(2) कवि अरमानों के बारे मे क्या कहता है ?

(3) प्रगति के बारे में क्या कहते हैं ?

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) कवि कदम मिलाकर चलने के लिए क्यों कहते हैं ?

(2) 'पावस बनकर ढलना होगा' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(3) काव्य में व्यक्त राष्ट्र-प्रेम का वर्णन कीजिए।

(4) कदम मिलाकर चलन में कौन सी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती है ?

**योग्यता-विस्तार**

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- इसी कविता की तुलना कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'एकला चलो रे.' से कीजिए।

●